हिन्दी साहित्य में व्यक्त गांधी

प्रो0 अनिल राय *

गांधी का चिंतन समाज, साहित्य और राजनीति बल्कि ऐसा कहें कि जीवन के अधिकांश क्षेत्रों को प्रभावित करता है, तो अतिशयोक्ति न होगी। उनकी 150वीं वर्षगांठ के अवसर पर बहुत सुखद अनुभव हो रहा है कि हम गांधी को याद कर रहे हैं क्योंकि धीरे–धीरे गांधी विस्मृत होते जा रहे हैं। जिन–जिन क्षेत्रों में उनकी जरूरत है उन क्षेत्रों में तो लुप्त ही होते जा रहे हैं ऐसे में गांधी को याद करना अत्यंत आवश्यक है। गांधी का हिंदी साहित्य पर गहरा प्रभाव है और स्वयं गांधी ने हिंदी साहित्य से प्रभाव ग्रहण किया था। गांधी जी के चिंतन में बहुत चीजों का समन्वय है जैसे सत्य, अहिंसा भाईचारा, शांति, सद्भावना और जो सबसे बड़ी चीज है वह सर्वोदय और अंत्योदय। यह गांधी जी के चिंतन का मूल था और इसकी अभिव्यक्ति हिंदी साहित्य में अनेक बार हुई है।

महात्मा गांधी बहुजन हिताय एवं ग्राम स्वराज के पक्ष में खड़े रहे; जिसका प्रभाव हिंदी साहित्य में प्रेमचंद और उनके बाद के रचनाकारों पर भी देखा जा सकता है। गांधीजी के समान ही मुंशी प्रेमचंद का व्यक्तित्व सरल और सादगी से परिपूर्ण था। प्रेमचंद ने 'गोदान', 'गबन', 'कर्मभूमि', 'कायाकल्प' जैसे उपन्यासों के माध्यम से कृषक जीवन को चित्रित किया है। प्रेमचंद का सूरदास गांधी का ही प्रतीक है। प्रेमचंद के उपन्यासों में कहीं न कहीं गांधी की अभिव्यक्ति हुई है, प्रेमचंद पर गांधी का सीधा प्रभाव दिखाई देता है। वहीं प्रेमचंद के बाद के रचनाकारों पर भी गांधी का प्रभाव दिखायी देता है, जैसे जैनेंद्र, 'रेणु' इत्यादि। जैनेंद्र के दो उपन्यास बहुत प्रसिद्ध हैं– पहला 'सुखदा' और दूसरा 'त्यागपत्र'। 'त्यागपत्र' में जो मृणाल का चरित्र है, उसे अगर हम ध्यान से समझें तो वह अपने आप को इतना कष्ट क्यों देती है? वह क्यों एक कोयला बेचने वाले के साथ जीवन जीने

* हिन्दी विभाग, दिल्ली विश्वविद्यालय

के लिए अभिशप्त है? वह पढ़ी–लिखी महिला है, फिर भी वह क्यों बाध्य है उस जगह जाने और ऐसा जीवन जीने के लिए? वह अन्य चुनाव भी कर सकती थी! लेकिन उसने संघर्ष का मार्ग अपनाया। आखिर क्यों? क्योंकि उस युग में गांधी का जो अहिंसा का सिद्धांत था यानी संघर्ष की प्रेरणा देने वाला सिद्धांत, उसकी अभिव्यक्ति जैनेंद्र अपने उपन्यास में करते हैं। इसी क्रम में फणीश्वरनाथ 'रेणु' के उपन्यास 'मैला आँचल' में भी ग्राम स्वराज की बात की गयी है। उस समय के हिंदी के कथाकार, कवि या नाटक के क्षेत्रों में जो भी लेखक लिख रहे थे वहाँ भी आपको गांधी का प्रभाव दिखाई देगा। जयशंकर प्रसाद के नाटकों में 'हिमाद्रि तुंग श्रृंग से' जो स्वतंत्रता पुकारती है, उसका स्वर कश्मीर से लेकर कन्याकुमारी तक आपको सुनाई देगा। प्रसाद का जो राष्ट्र के प्रति समर्पण और राष्ट्रीयता का स्वर जो उनके यहाँ सुनाई देता है, वह गांधी के प्रभाव से ही है। इसलिए मैं यह मानता हूँ गांधीवाद का जो प्रतिफल है वह आपको प्रसाद के नाटकों और काव्य में भी मिलेगा। इसका प्रत्यक्ष उदाहरण आप कामायनी में देख सकते हैं। गांधी ने 1909 में हिंद स्वराज लिखा और उसमें मशीनीकरण का विरोध किया था। इसी मशीनीकरण का विरोध प्रसाद कामायनी में भी करते हैं, सारस्वत प्रदेश की जो जनता है इस मशीनीकरण का विरोध करती है। यह जो विकासवाद की राजनीति है उसका विरोध करती है क्योंकि इस विकासवाद के कारण जो विनाश के हथियार बनाए जा रहे हैं, इसका भयानक परिणाम हमारे सामने है। गांधी और प्रसाद ऐसा मानते हैं कि उसका विरोध होना ही चाहिए। यह जो अतिशय वैज्ञानिकता के कारण भीषण परिणाम सामने आ रहे हैं उसका विरोध गांधी ने किया था और इसी का प्रतिबिंब आपको प्रसाद के काव्य कामायनी और उनकी अन्य रचनाओं– जैसे लहर की कविताओं जिनमें 'पेशोला की प्रतिध्वनि' और 'शेर सिंह का शस्त्र समर्पण' प्रमुख है– में आपको गांधीवाद का प्रभाव दिखाई देगा।

गांधी कर्म पर बहुत जोर देते थे, सर्वेश्वर दयाल सक्सेना का एक नाटक है बकरी। गांधी का जो कर्मवाद है, उसका प्रतिफल है बकरी नाटक।

कथा साहित्य और नाटकों के अलावा कविता में भी गांधी जी के आदर्शों का प्रभाव देखा जा सकता है। मैथिलीशरण गुप्त का एक काव्य है यशोधरा। गुप्तजी जब यशोधरा लिख रहे थे तो उन्होंने महात्मा गांधी से पत्र व्यवहार किया था और महात्मा गांधी ने उन्हें सुझाव दिया कि

महिलाओं की कुछ समस्याओं को अपने काव्य के माध्यम से उन्हें उठाना चाहिए। इसलिए गुप्तजी यशोधरा लिखते हैं और साकेत में उर्मिला को केंद्र में लाते हैं। उर्मिला को बिना वनवास के वनवास का जो दुःख भोगना पड़ रहा है उसकी स्थिति का वर्णन अत्यन्त कारुणिक है। साकेत के राम धरती को स्वर्ग बनाने के लिए आए हैं, यह गांधीवाद के प्रभाव के कारण ही संभव हो पाया। मैथिलीशरण गुप्त ने अपने काव्य भारत भारती में गांधी के आदर्शों की बात की है। जैसे 'श्रीगोखले, गांधी– सदृश नेता महामतिमान'। इतना ही नहीं सुभद्रा कुमारी चौहान 'बालिका का परिचय' नामक कविता में लिखती हैं–

'मेरा मंदिर, मेरी मस्जिद, काबा–काशी यह मेरी,
पूजा–पाठ ध्यान जप–तप है घट घट वासी यह मेरी।'

महादेवी वर्मा ने तो गांधीजी को 'धरा पुत्र' कह कर संबोधित किया है –

'हे धरा के अमर पूत, तुमको अशेषप्रणाम!'

सोहनलाल द्विवेदी ने गांधीजी को महात्मा और पुण्यात्मा कहते हुए लिखा है–

'ठहरो चिता लगाओ मत, ओ निर्मम देश महात्मा की,
एक बार फिर चरण–धूलि ले लेने दो पुण्यात्मा की।'

इस तरह हम कह सकते हैं कि गांधी जनता के मानस में सत्य, अहिंसा, प्रेम, एकता, शांति, सद्भाव, सर्वधर्म समभाव, समानता, मानवता की भावना पैदा करने के लिए सतत संघर्षरत रहे।

गांधी हिंदी भाषा को राष्ट्रीय एकता का प्रतीक मानते थे इसलिए वे हिंदी के पक्षधर थे। वे ऐसी हिंदी के पक्षधर थे जो ज्यादा संस्कृतनिष्ठ न हो, ऐसी हिंदी को वे हिंदुस्तानी कहते थे। गांधी भाषा को लेकर बहुत फ्लैक्सिबल थे। उसका कारण यह है कि हमारे भारत में सांस्कृतिक विविधता वाले बहुभाषी लोग रहते हैं। इसलिए महात्मा गांधी ऐसा मानते थे कि हिंदी इन सबको एक कर सकती है। हिंदी साहित्य में प्रेमचंद के कथा साहित्य को गांधी ने बहुत अधिक महत्त्व दिया। उसका कारण है कि प्रेमचंद जिस भाषा में साहित्य रच रहे थे वह हिंदुस्तानी ही थी।

अब बात कर लेते हैं गांधी के ऊपर जो हिंदी साहित्य का प्रभाव है यानी महात्मा गांधी ने हिंदी साहित्य से जो प्रभाव ग्रहण किया। कौन सा साहित्यिक ग्रंथ उनके लिए आदर्श बना! किसके सहारे उन्होंने हिंद स्वराज

की नींव रखी? जाहिर है यह प्रश्न तो बनता ही है कि क्या सिर्फ गांधी का प्रभाव हिंदी साहित्य पर है या गांधी ने भी हिंदी साहित्य से कुछ लिया है? महात्मा गांधी के जीवन पर हिंदी साहित्य के जिस ग्रंथ का सर्वाधिक प्रभाव है, वह तुलसीदास का 'रामचरितमानस' है। गांधी ने अपने हिंद स्वराज की प्रेरणा तुलसीदास के रामराज्य से ही ली है। तुलसीदास की अनेक चौपाइयाँ गांधीजी को याद थी। रामचरितमानस के रामराज्य को गांधी ने अपने हिंद स्वराज के लिए प्रेरणा के रूप में लिया, जैसे **^ijfgr lfjl /ke! ufg HkkbA ij ihMk le ufg v/kekbA AA***

इस चौपाई से गांधी जी अत्यंत प्रभावित थे। उन्होंने इस चौपाई को अपने जीवन में सत्य, अहिंसा और दया के लिए हथियार के रूप में प्रयोग किया।

संक्षेप में, उपर्युक्त तथ्यों के आधार पर हमें साफ दिखाई देता है कि व्यक्तिगत जीवन से लेकर समाज, राजनीति, राष्ट्रधर्म, अध्यात्म, नैतिकता, प्रेम आदि से जुड़ी विभिन्न समस्याओं के संदर्भ में गांधी जी को हिंदी साहित्य से हमेशा प्रेरणा मिलती रही और गांधी जी से प्रभावित होकर अनेक रचनाकारों ने उन्हें अपनी रचनाओं में किसी न किसी रूप में स्थान दिया है। अंत में, मैं रेणु के उपन्यास का जिक्र फिर से कर रहा हूँ, उस उपन्यास में गांधी के सपनों का भारत था। गांधी ने जिस आजाद हिंदुस्तान का सपना देखा था उसकी जो परिणति हुई है। वह किस तरह की हुई है वह आप समझ सकते हैं। मैला आँचल में बावनदास एक सवाल उठाता है कि जब तक गरीबी और जहालत ख़त्म ना होगा यह आँचल मैला ही रहेगा। गांधी से रेणु तक के भारत में जो गरीबी और जहालत थी, वह आज भी हिंदुस्तान की बहुत बड़ी समस्या है। आजाद होने के बाद से आज तक हम एक यही नारा देते हैं कि 'गरीबी हटाओ'! आखिर क्यों गरीबी नहीं हट रही? आज भारत की आजादी के 70 साल बाद भी हम गरीबी और जहालत से परेशान हैं। गांधी के सर्वोदय, अंत्योदय और स्वराज का क्या हुआ? यह सवाल आज भी ज्यों का त्यों बना हुआ है।